नष्टोमोहा बनने की भिन्न-भिन्न युक्तियाँ

अपने को हरेक स्मृति स्वरूप समझते हो? स्मृति स्वरूप हो जाने से स्थिति क्या बन जाती है और कब बनती है? स्मृति स्वरूप तब बनते हैं जब नष्टोमोहा हो जाते हैं। तो ऐसे नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप बने हो कि अभी विस्मृति स्वरूप हो? स्मृति स्वरूप से विस्मृति में क्यों आ जाते हो? जरूर कोई न कोई मोह अर्थात् लगाव अब तक रहा हुआ है। तो क्या जो बाप से पहला-पहला वायदा किया है कि और संग तोड़ एक संग जोड़ेंगे, क्या यह पहला वायदा निभाना नहीं आता है? पहला वायदा ही नहीं निभायेंगे तो पहले नम्बर के राज्य अधिकारी वा राज्य के सम्बन्ध में कैसे आयेंगे? क्या सेकेण्ड जन्म के राज्य में आना है? जो पहला वायदा नष्टोमोहा होने का निभाते हैं वही पहले जन्म के राज्य में आते हैं। पहला वायदा कहो वा पहला पाठ कहो वा ज्ञान की पहली बात कहो वा पहला अलौकिक जन्म का श्रेष्ठ संकल्प कहो, क्या इसको निभाना मुश्किल लगता है? अपने स्वरूप में स्थित होना वा अपने आपकी स्मृति में रहना – यह कोई जन्म में मुश्किल लगा? सहज ही स्मृति आने से स्मृति स्वरूप बनते आये हो ना। तो इस अलौकिक जन्म के स्व स्वरूप को स्मृति में मुश्किल क्यों अनुभव करते हो? जबकि साधारण मनुष्य के लिये भी कहावत है कि मनुष्य आत्मा की विशेषता ही यह है कि मनुष्य जो चाहे वह कर सकता है। पशुओं और मनुष्यात्मा में मुख्य अन्तर यही तो है। तो जब साधारण मनुष्यात्मा जो चाहे सो करके दिखा रही है तो क्या आप श्रेष्ठ मनुष्य आत्माएं, शक्ति स्वरूप आत्माएं, नॉलेजफुल आत्माएं, बाप के समीप सम्पर्क में आने वाली आत्माएं, बाप की डायरेक्ट पालना लेने वाली आत्माएं, पूजनीय आत्माएं, बाप से भी श्रेष्ठ मर्तबा पाने वाली आत्माएं जो चाहे वह नहीं कर सकती हैं? तो साधारण और श्रेष्ठ में अन्तर ही क्या रहा? साधारण आत्मायें जो चाहे कर सकती हैं लेकिन जब चाहें, जैसे चाहें वैसे नहीं कर सकती क्योंकि उन्हों में प्रकृति की पॉवर है, ईश्वरीय पॉवर नहीं है। ईश्वरीय पॉवर वाली आत्माएं जो चाहे, जब चाहे, जैसे चाहे वैसे कर सकती हैं। तो जो विशेषता है उसको प्रैक्टिकल में नहीं ला सकते हो? वा आप लोग भी अभी तक यही कहते हो कि चाहते तो नहीं हैं लेकिन हो जाता है। जो चाहते हैं वह कर नहीं पाते हैं। यह बोल मास्टर सर्वशक्तिमान के वा श्रेष्ठ आत्माओं के नहीं हैं। साधारण आत्माओं के हैं। तो क्या अपने को साधारण आत्माएं समझते हो? अपना अलौकिक जन्म, अलौकिक कर्म जो है उसको भूल जाते हो? किसी भी वस्तु से वा किसी भी व्यक्ति से, कोई भी व्यक्त भाव से लगाव क्यों होता है? क्या जो भी वस्तु देखते हो, उन वस्तुओं की तुलना में जो अलौकिक जन्म की प्राप्ति है वह और यह वस्तुएं, उन्हों में रात-दिन का अन्तर नहीं अनुभव हुआ है क्या? क्या व्यक्त भाव से प्राप्त हुआ दु:ख-अशान्ति का अनुभव अब तक पूरा नहीं किया है क्या? जो भी व्यक्ति देखते हो उन सर्व व्यक्तियों से पुरानी दुनिया के नातों को वा सम्बन्ध को इस अलौकिक जन्म के साथ समाप्त नहीं किया है? जब जन्म नया हो गया तो पुराने जन्म के व्यक्तियों के साथ पुराने सम्बन्ध समाप्त नहीं हो गये क्या? नये जन्म में पुराने सम्बन्ध का लगाव रहता है क्या? तो व्यक्तियों से भी लगाव रख ही कैसे सकते हो? जबकि वह जन्म ही बदल गया तो जन्म के साथ सम्बन्ध और कर्म नहीं बदला? या तो यह कहो कि अब तक अलौकिक जन्म नहीं हुआ है। साधारण रीति से जहाँ जन्म होता है, जन्म के प्रमाण ही कर्म होता है, सम्बन्ध-सम्पर्क होता है। तो यहाँ फिर जन्म अलौकिक और सम्बन्ध लौकिक से

क्यों? वा कर्म फिर लौकिक क्यों? तो अब बताओ नष्टोमोहा होना सहज है वा मुश्किल है? मुश्किल क्यों होता है? क्योंकि जिस समय मोह उत्पन्न होता है उस समय अपनी शक्ल नहीं देखते हो? आईना तो मिला हुआ है ना। आईना साथ में नहीं रहता है क्या? अगर शक्ल को देखेंगे तो मोह खत्म हो जायेगा। अगर यह देखने का अभ्यास पड़ जाये तो अभ्यास के बाद न चाहते भी बार-बार स्वत: ही आईने के तरफ खैंच जायेंगे। जैसे स्थूल में कईयों को आदत होती है बार-बार देखने की। प्रोग्राम नहीं बनाते लेकिन आटोमेटिकली आईने तरफ चले जाते हैं – क्योंकि अभ्यास है। यह भी नॉलेज रूपी दर्पण में, अपने स्वमान रूपी दर्पण में बार-बार देखते रहो तो देह अभिमान से फौरन ही स्वमान में आ जायेंगे।

जैसे स्थूल शरीर में कोई भी अन्तर मालूम होता है तो आईने में देखने से फौरन ही उसको ठीक कर देते हैं। वैसे ही इस अलौकिक दर्पण में जो वास्तविक स्वरूप है इसको देखते हुए जो देह अभिमान में आने से व्यर्थ संकल्पों का स्वरूप, व्यर्थ बोल का स्वरूप वा व्यर्थ कर्म वा सम्बन्ध का स्वरूप स्पष्ट देखने से व्यर्थ को समर्थ में बदल लेते हैं फिर यह मोह रहेगा क्या? और जब नष्टोमोहा हो जायेंगे तो नष्टोमोहा के साथ सदा स्मृति स्वरूप स्वत: ही हो जायेंगे। सहज नहीं है? जब सर्व प्राप्ति एक द्वारा होती है तो उसमें तृप्त आत्मा नहीं होते हो क्या? कोई अप्राप्त वस्तु हो जाती है तब तो तृप्त नहीं होते हैं। तो क्या सर्व प्राप्ति का अनुभव नहीं होता है? अभी तृप्त आत्मा नहीं बने हो? जो बाप दे सकते हैं, क्या वह यह विनाशी आत्माएं इतने जन्मों में दे सकी हैं? जब अनेक जन्मों में भी अनेक आत्माएं वह चीज़, वह प्राप्ति नहीं करा सकी हैं और बाप द्वारा एक ही जन्म में प्राप्त होती हैं तो बताओ बुद्धि कहाँ जानी चाहिए? भटकाने वालों में, रुलाने वालों में, ठुकराने वालों में वा ठिकाना देने वाले में? जैसे आप और आत्माओं से बहुत प्रश्न करते हो ना। तो बाप का भी आप आत्माओं से यही एक प्रश्न है। इस एक प्रश्न का ही उत्तर अब तक दे नहीं पाये हो। जिन्होंने इस प्रश्न का उत्तर दिया है वह सदा के लिये प्रसन्न रहते हैं, जिन्होंने उत्तर नहीं दिया है वह बार-बार उतरती कला में उतरते ही रहते हैं।

नष्टोमोहा बनने के लिये अपने स्मृति स्वरूप को चेंज करना पड़ेगा। मोह तब जाता है जब यह स्मृति रहती है कि हम गृहस्थी हैं। हमारा घर, हमारा सम्बन्ध है तब मोह जाता है। तो इस हद के जिम्मेवारी को बेहद की जिम्मेवारी में परिवर्तन कर लो तो बेहद की जिम्मेवारी से हद की जिम्मेवारी स्वत: ही पूरी हो जायेगी। बेहद को भूलकर हद की जिम्मेवारी को निभाने के लिये जितना समय और संकल्प लगाते हो इतना ही निभाने के बजाये बिगाड़ते जाते हो। भल समझते हो कि हम फ़र्ज निभा रहे हैं वा कर्तव्य को सम्भाल रहे हैं। वह निभाना वा सम्भालना नहीं है। और ही अपने हद की स्मृति में रहने के कारण उन निमित्त बनी हुई आत्माओं का भी भाग्य बनाने के बजाये बिगाड़ने के निमित्त बनते हो। जो फिर वह आत्माएं भी आपकी अलौकिक चलन को न देखते हुए अलौकिक बाप के साथ सम्बन्ध जोड़ने में वंचित रह जाती हैं। तो फ़र्ज के बजाए और ही अपने आप में भी मर्ज लगा देते हो। यह मोह का मर्ज है और वही मर्ज अनेक आत्माओं में भी स्वत: ही लग जाता है। तो जिसको फर्ज समझ रहे हो वह फर्ज बदल करके मर्ज का रूप हो जाता है इसलिए सदा अपने इस स्मृति को परिवर्तन करने का पुरुषार्थ करो। मैं गृहस्थी हूँ, फलाने बन्धन वाली हूँ वा मैं फलाने ज़िम्मेवारी वाली हूँ, इसके बजाए अपने मुख्य 5 स्वरूप स्मृति में लाओ। जैसे 5 मुखी ब्रह्मा दिखाते हैं ना। 3 मुख भी दिखाते हैं, 5 मुख भी दिखाते हैं। तो आप ब्राह्मणों को भी 5 मुख्य स्वरूप स्मृति में रहें तो मर्ज निकल विश्व कल्याणकारी के फर्ज में चले जायेंगे। वह स्वरूप कौन सा है, जिस स्मृति स्वरूप में रहने से

यह सभी रूप भूल जायें? स्मृति में रखने के 5 स्वरूप बताओ। जैसे बाप के 3 रूप बताते हो वैसे आपके 5 रूप हैं –

1.मैं बच्चा हूँ, 2.गॉडली स्टूडेन्ट हूँ, 3. रूहानी यात्री हूँ, 4. यौद्धा हूँ और 5.ईश्वरीय वा खुदाई खिदमतगार हूँ। यह 5 स्वरूप स्मृति में रहे। सवेरे उठने से बाप के साथ रूह-रूहान करते हो ना। बच्चे रूप से बाप के साथ मिलन मनाते हो ना। तो सवेरे उठने से ही अपना यह स्वरूप याद रहे कि मैं बच्चा हूँ तो फिर गृहस्थी कहाँ से आयेगी? और आत्मा बाप से मिलन मनाये, मिलन से सर्व प्राप्ति का अनुभव हो जाये तो फिर बुद्धि यहाँ वहाँ क्यों जायेगी? इससे सिद्ध है कि अमृतवेले के इस पहले स्वरूप की स्मृति की ही कमजोरी है इसलिये अपने गिरती कला के रूप स्मृति में आते हैं। ऐसे ही सारे दिन में अगर यह पाँचों ही रूप समय प्रति समय भिन्न-भिन्न कर्म के प्रमाण स्मृति में रखो तो क्या स्मृति स्वरूप होने से नष्टोमोहा नहीं हो जायेंगे? इसलिये बताया – मुश्किल का कारण यह है जो शक्ल को नहीं देखते हो। तो सदैव कर्म करते हुए अपने दर्पण में इन स्वरूपों को देखो कि इन स्वरूपों के बदली और स्वरूप तो नहीं हो गया? रूप बिगड़ तो नहीं गया? देखने से बिगड़े हुए रूप को सुधार लेंगे और सहज ही सदाकाल के लिये नष्टोमोहा हो जायेंगे। समझा? अभी यह तो नहीं कहेंगे कि नष्टोमोहा कैसे बने? नहीं, नष्टोमोहा ऐसे बने। 'कैसे' शब्द को 'ऐसे' शब्द में बदल देना है। जैसे यह स्मृति में लाते हो कि हम ही ऐसे थे, अब फिर से ऐसे बन रहे हैं। तो 'कैसे' शब्द को 'ऐसे' में बदल लेना है। 'कैसे बनें', इसके बजाये 'ऐसे बने', इसमें परिवर्तन कर लो तो जैसे थे वैसे बन जायेंगे। 'कैसे' शब्द ख़त्म हो 'ऐसे' बन ही जायेंगे।

अच्छा! ऐसे सेकेण्ड में अपने को विस्मृति से स्मृति स्वरूप में लाने वाले नष्टोमोहा, सदा स्मृति स्वरूप बनने वाले समर्थ आत्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

प्रश्नः- एडवांस पार्टी का क्या कार्य चल रहा है?

उत्तरः- एडवांस पार्टी वाले आप लोगों के लिए सारी फील्ड तैयार करेंगे। उनके परिवार में जाओ, न जाओ, लेकिन जो स्थापना का कार्य होना है उसके लिए वह निमित्त बनेंगे। कोई पावरफुल स्टेज लेकर निमित्त बनेंगे। ऐसी पावर्स लेंगे जिससे स्थापना के कार्य में मददगार बनेंगे। आजकल आप देखेंगे दिन-प्रतिदिन न्यू-ब्लड का रिगार्ड ज्यादा है। जितना आगे बढ़ेंगे उतना छोटों की बुद्धि जो काम करेगी वह बूढ़ों की नहीं, यह चेंज होगी। बड़े भी बच्चों की राय को रिगार्ड देंगे। अब भी जो बड़े हैं वह समझते हैं - ''हम तो पुराने जमाने के हैं, यह हैं आजकल के। इन्हों को रिगार्ड नहीं देंगे, बड़ा समझ कर नहीं चलायेंगे तो काम नहीं चलेगा।'' पहले बच्चों को रोब से चलाते थे, अभी ऐसे नहीं। बच्चे को भी मालिक समझ चलाते हैं। तो यह भी ड्रामा है। छोटे ही कमाल कर दिखायेंगे। एडवांस में जाने लिए रूके हुए हैं। उनका कार्य ही आपके कनेक्शन से चलना है। सारे कार्य का आधार विशेष आत्माओं के ऊपर है। चलते-चलते ठण्डाई हो जाती है। आग लगती है, फिर शीतल हो जाती है। लेकिन शीतल तो होनी नहीं चाहिए ना! बाहर का जो रूप होता है, मनुष्य तो वह देखते हैं। समझते हैं - ''यह तो चलता आता है, बड़ी बात क्या है! परम्परा का खेल चलता आ रहा है।'' लेकिन यह चलते-चलते शीतलता क्यों आती हैं? इसका कारण क्या है?

आप लेक्चर्स तो करते हो लेकिन लेक्चर के साथ फीचर्स भी अट्रैक्ट करें तब लेक्चर का इफेक्ट हो। तो अपने को हर सब्जेक्ट में चेक करो। आजकल लेक्चर में आपका कम्पटीशन करें तो इसमें कई और भी जीत लेंगे। लेकिन जो प्रैक्टिकल में है उसमें सभी आपसे हार लेंगे। मुख्य विशेषता

प्रैक्टिकल लाइफ की है। प्रैक्टिकल कोई भी बात आप बताओ तो एकदम चुप हो जायेंगे। तो लेक्चर्स से फिर प्रैक्टिकल का भाव प्रकट हो जायेगा। तब वह लेक्चर देने से न्यारा दिखाई दे। जो शब्द बोलते हो वह नैनों से दिखाई दे। यह जो बोलते हैं वह प्रैक्टिकल है, यह अनुभवीमूर्त हैं। तब उसका प्रभाव पड़ सकता है। बाकी सुन-सुन कर तो सभी थक गये हैं। बहुत सुना है। अनेक सुनाने वाले होने कारण सुनने से सभी थके हुए हैं। कहते हैं - सुना तो बहुत है, अब अनुभव करना चाहते हैं, कोई 'प्राप्ति' कराओ। तो लेक्चर में ऐसी पावर होनी चाहिए जो वह एक-एक शब्द अनुभव कराने वाला हो। जैसे आप समझाते हो न कि अपने को आत्मा समझो, ना कि शरीर। तो ये शब्द बोलने में भी इतनी पावर होनी चाहिए जो सुनने वालों को आपके शब्दों की पावर से अनुभव हो। एक सेकेण्ड के लिए भी अगर उनको अनुभव हो जाता हैं; तो अनुभव को वह छोड़ नहीं सकते, आकर्षित हुआ आपके पास पहुंचेगा। जैसे बीच-बीच में आप भाषण करते-करते उनको साइलेन्स में ले जाने का अनुभव कराते हो, तो इस प्रैक्टिस को बढ़ाते जाओ। उन्हों को अनुभव में ले जाते जाओ। इस पुरानी दुनिया से बेहद का वैराग दिलाना चाहते हो तो भाषण में जो प्वाइन्ट देते हो वह देते हुए वैराग्य-वृत्ति के अनुभव में ले जाओ। वह फील करें कि सचमुच यह सृष्टि जाने वाली है, इससे तो दिल लगाना व्यर्थ है। तो जरूर प्रैक्टिकल करेंगे। उन पण्डितों आदि के बोलने में भी पावर होती है। एक सेकेण्ड में खुशी दिला देते, एक सेकेण्ड में रूला देते। तब कहते हैं इनका भाषण इफेक्ट करने वाला है। सारी सभा को हंसाते भी हैं, सभी को शमशानी वैराग्य में लाते भी हैं ना। जब उन्हों के भाषण में इतनी पावर होती है; तो क्या आप लोगों के भाषण में वह पावर नहीं हो सकती? अशरीरी बनाना चाहो तो वह अनुभव करा सकते हैं? वह लहर छा जाये। सारी सभा में स्नेह की लहर छा जाये। उसको कहा जाता है प्रैक्टिकल अनुभव कराना। अब ऐसे भाषण होने चाहिए, तब कुछ चेंज होगी। वह समझे कि इन्हों के भाषण तो दुनिया से न्यारे हैं। वह भले भाषण में सभा को हंसा लेते, रूला लेते, लेकिन अशरीरीपन का अनुभव नहीं करा सकते, बाप से स्नेह नहीं पैदा करा सकते। कृष्ण से स्नेह करा सकते, लेकिन बाप से नहीं करा सकते। उन्हों को पता नहीं है। तो निराली बात होनी चाहिए। समझो, गीता के भगवान पर प्वाइन्ट्स देते हो, लेकिन जब तक उनको बाप क्या चीज है, हम आत्मा है, वह परमात्मा है - जब तक यह अनुभव ना कराओ तब तक यह बात भी सिद्ध कैसे होगी? ऐसा कोई भाषण करने वाला हो जो उन्हों को अनुभव कराये - आत्मा और परमात्मा में रात-दिन का फर्क है। जब अन्तर महसूस करेंगे तो गीता का भगवान सिद्ध हो जायेगा। सिर्फ प्वाइंट्स से उन्हों की बुद्धि में नहीं बैठेगा, और ही लहरें उत्पन्न होंगी। लेकिन अनुभव कराते जाओ तो अनुभव के आगे सब झुकेंगे, कोई जीत नहीं सकेगा। भाषण में अब यह तरीका चेंज करो। अच्छा!

वरदान:- सत्यता की महानता द्वारा सदा खुशी के झूले में झूलने वाले अथॉरिटी स्वरूप भव

सत्यता की अथॉरिटी स्वरूप बच्चों का गायन है–सच तो बिठो नच। सत्य की नांव हिलेगी लेकिन डूब नहीं सकती। आपको भी कोई कितना भी हिलाने की कोशिश करे लेकिन आप सत्यता की महानता से और ही खुशी के झूले में झूलते हो। वह आपको नहीं हिलाते लेकिन झूले को हिलाते हैं। यह हिलाना नहीं लेकिन झुलाना है इसलिए आप उन्हें धन्यवाद दो कि आप झुलाओ और हम बाप के साथ झूलें।

स्लोगन:-

सर्व शक्तियों की लाइट सदा साथ रहे तो माया समीप नहीं आ सकती।